Historicity Research Journal
Volume 1 | Issue 10 | June 2015

ISSN:- 2393-8900

Research Article

''बरासौ (जिला–भिण्ड) से प्राप्त सर्वभतोभद्र शिवलिंग एवं अन्य शैव प्रतिमाये''

टीकम तेनवार[1] , लल्लेश कुमार[2]

[1]सहा. पुरातत्वविद् , पुरातत्व संग्रहालय ,शिवपुरी (म. प्र.)
[2]शोधार्थी, प्राचीन भारतीय इतिहास, संस्कृति एवं पुरातत्व अध्ययनशाला ,
जीवाजी विश्वविद्यालय, ग्वालियर.

सारांश :

बरासौ जिला मुख्यालय भिण्ड़ (म. प्र.) से लगभग 25 किमी दूर बेसुली (प्राचीन वृश्चिकला) नदी के तट पर स्थित है। ग्राम बरासौ जैन अतिशय क्षेत्र माना जाता है और किसी समय यह जैन धर्म का प्रमुख केन्द्र था। लगभग 2500 वर्ष पूर्व भगवान महावीर का समवशरण यहाँ कुछ समय के लिये रूका था। इसी के उपलक्ष में क्वार की दौज को प्रति वर्ष यहाँ एक मेले का आयोजन किया जाता है। यहाँ के जैन मंदिरों में 150 से अधिक जैन तीर्थकरों की प्रस्तर एवं धातु प्रतिमायें संग्रहित हैं। इन जैन प्रतिमाओं पर 11वीं –16वीं शताब्दी ई. के अभिलेख उत्कीर्ण है। अभिलेखों से ज्ञात होता है कि इन प्रतिमाओं को जैनमुनि एवं उनके समर्थकों ने स्थापित किया था। इन्हीं में से एक तीर्थंकर की प्रतिमा पर प्राचीन बल्लभपुर नगर का वर्णन आया है, जिसकी पहचान वर्तमान बरही (जिला–भिण्ड़) से की जाती हैं। बरही उस समय सूती वस्त्र व्यवसाय का प्रमुख केन्द्र था।

प्रस्तावना :

बरासौ जैन धर्म के लिये विख्यात है, परन्तु यहाँ स्थित शैव सम्प्रदाय के अवशेषों से स्पष्ट है कि यह प्राचीनकाल में शैवधर्म का प्रमुख केन्द्र रहा होगा। वर्तमान में घरेलू कार्य के लिये हो रहे उत्खनन में शिव, वैष्णव एवं अन्य सम्प्रदाय से संबंधित पुरावशेष निकलते रहते है। ग्राम में आज व्यवस्थित उत्खनन की आवश्यकता है ताकि यहाँ के प्राचीन शैव परम्परा को प्रकाश में लाया जा सके।

पार्वती

पार्वती की प्रतिमा जैन मंदिर के समाने पहाडी पर बने एक नवीन मंदिर की पीछे की दीवाल पर लगी हुई है। प्रतिमा की केवल आवक्ष आकृति ही शेष है। यह प्रतिमा अपने–आप में विशिष्ट एवं अनूठी है। प्रतिमा के सिर पर बना जटामुकुट विशिष्ट प्रकार का है। पार्वती की अन्य प्रतिमाओं की तरह यह प्रतिमा आभूषणों से अलंकृत नहीं है। संभवतः यह पंचतपस पार्वती की प्रतिमा रही होगी। पार्वती की एक आवक्ष आकृति तुलसी संग्रहालय, रामवन (सतना) में सुरक्षित है, जो 5वीं शताब्दी ई. की स्वीकार की गयी है। बरासों की पार्वती प्रतिमा तुलसी संग्रहालय के समकालीन प्रतीत होती है तथा केन्य विन्यास में तुलसी संग्रहालय से विशिष्ट है। अतः उक्त पार्वती प्रतिमा को गुप्तकालीन स्वीकार की जा सकती है। (चित्र क्र. 1)

उमा– महेश्वर

उमा–महेश्वर को प्रकृति और पुरूष का प्रतीक माना गया है। रूपमण्ड़न के अनुसार शिव की प्रतिमा चतुर्भुजी

तथा उमा को बायें ओर प्रदर्शित करना चाहिए। उमा–महेश्वर के साथ सिंह, नंदी, स्कंद, गणेश तथा नृत्यरत भृंगी ऋषि को प्रदर्शित करना चाहिए।1 उमा का उल्लेख पहली बार ''केन उपनिषद्'' में हुआ है, जहाँ उन्हें 'उमा हैमवती' कहा गया है। शिव सूत्र में उमा को शिव की इच्छा शक्ति और कुमारी बताया गया है। उमा–महेश्वर की मूर्ति शिल्प में उमा और शिव को दम्पत्ति रूप में अंकित किया गया है। शिव को वामांगी तथा उमा को प्रायः शिव की बांयी जंघा पर बैठो हुए आलिंगन मुद्रा में प्रदर्शित किया जाता है। शिल्पग्रंथों में उमा–महेश्वर की मूर्तियों का उल्लेख मिलता है। विष्णुधर्मोत्तरपुराण में शिव तथा उमा दोनों को द्विभुजी बताया गया है और स्त्री–पुरूष के मिथुनरूप में उमेश का दिव्य रूप बनाने का निर्देश दिया गया है। उसमें कहा गया है कि जटाओं और अर्द्धचन्द्र से विभूषित अष्टवक्त्र देवेश की बायी भुजा उमा के स्कंध पर रखी होना चाहिए तथा उनका दायाँ हाथ उत्पल से सुशोभित होना चाहिए। इस प्रकार उमा का दायाँ हाथ शिव के स्कंध पर तथा उनके बायें हाथ में दर्पण होना चाहिए।[2]

उमा–महेश्वर की प्रतिमा पूर्णतः खण्डित है। प्रतिमा का केवल नीचे का भाग पाद पीठ ही शेष है, जिसमें शिव के पैर, बांयी ओर मयूरासीन कार्तिकेय, नृत्यरत् गणेश, नृत्यरत् भृंगी ऋषि, नदी आदि शेष है। यह प्रतिमा एक चबूतरे पर स्थापित है। उसी पर एक शिवलिंग तथा नन्दी स्थापित है। पास ही मंदिर के प्रस्तर खण्ड़ बिखरे पड़े है। उमा–महेश्वर का अंकन ग्वालियर–चम्बल संभाग का लोकप्रिय अंकन था। उमा–महेश्वर का अंकन ग्वालियर, बटेसर, दूबकुण्ड़, बरहद, राजगढ, भिण्ड आदि क्षेत्रों से प्राप्त होता है।

बरासौ से प्राप्त एक प्रतिमा जिला संग्रहालय, भिण्ड में संग्रहित है। यह प्रतिमा अन्य उमा–महेश्वर प्रतिमाओं से भिन्न है तथा इसका काल लगभग 9वीं शताब्दी स्वीकार किया जा सकता है। इसमें उमा शिव के बांयी जंघा पर आसीन तथा उनका एक पैर पदम पर रखा हुआ है। शिव बांये हाथ में त्रिशूल तथा उमा का दांया हाथ शिव की जंघा पर रखा हुआ तथा दोनों के एक–एक हाथ खण्डित है। शिव का एक पैर वाहन नन्दी पर रखा हुआ है। प्रतिमा पाद पर शिव पुत्र गणेश दांये तथा बांये मयूरासीन कार्तिकेय अंकित है। बीच में भृंगी ऋषि का अंकन किया गया है। प्रतिमा के शीर्ष पर तीन शिवलिंग तथा एकमुख लिंग अंकित है जो इस प्रतिमा की प्रमुख विशेषता है। अन्य प्रतिमाओं की तरह यह प्रतिमा भी कुण्ड़ल, हार, भुजबंध, ककण आदि से अलंकृत है। (चित्र क्र. 2)

नवग्रह

नवग्रह का अंकन एक शिलापट्ट पर किया गया है, जो दो भागों में खण्ड़ित है। शिलापट्ट एक नवीन मंदिर में स्थापित है। शिलापट्ट के एक भाग में चार ग्रह तथा दूसरे भाग में राहु–केतु सहित तीन ग्रह हैं। इस प्रकार शिलापट्ट पर कुल सात ग्रह उत्कीर्ण है। सभी ग्रह दो भुजी हैं तथा द्विभंग मुद्रा हैं। उनका एक दांया हाथ वरद तथा बांया हाथ कटि पर आसीन है। उक्त प्रतिमा खण्ड लगभग 9 वी शती ई. प्रतीत होते है।

साहित्य एवं पुरातात्विक साक्ष्यों में ग्रहों की संख्या 9 बतायी गयी है। भारतीय जोतिष शास्त्र में सूर्य, चन्द्र (सोम), मंगल, बुध, बृहस्पति, शुक्र, शनि, राहु और केतु नामक नवग्रहों का उल्लेख मिलता है। ऐसी मान्यता है कि इनके पूजन से अनिष्ट का नाश हो जाता है। विभिन्न पुराणों एवं शिल्पशास्त्रीय ग्रंथों में ग्रहों के स्वरूप तथा आयुधों आदि का उल्लेख मिलता है। अपराजितपृच्छा तथा रूपमण्ड़न में समान रूप से प्रत्येक ग्रह के वर्ण, आयुध, वाहन आदि का विवरण प्रस्तुत किया गया है। उत्तर भारतीय मंदिरों में इनकी प्रतिमाएँ पृथक–पृथक नहीं मिलती हैं, बल्कि सभी ग्रहों का अंकन सामूहिक रूप में एक ही शिलापट्ट में किया गया है। ऐसे नवग्रह पट्ट प्रायः प्रवेशद्वारों के उत्तरंग के रूप प्रयुक्त हुए हैं। इसके विपरीत दक्षिण भारतीय मंदिरों में प्रत्येक ग्रह की अलग–अलग मूर्तियाँ मिलती हैं। (चित्र क्र. 3)

सप्तमातृकायें

मत्स्य पुराण के अनुसार शिव और अंधकासुर का युद्ध महाकाल वन में हुआ था। महाकाल में जिस समय शिव अंधकासुर से युद्ध कर रहे थे उस समय अन्धकासुर के शरीर से जितनी रक्त की बूंदें गिरती उतने ही नवीन अन्धकासुर उत्पन्न हो जाते है। उसी समय रक्त बूदों को समाप्त करने के लिए शिव ने अपनी शक्ति उत्पन्न की। शिव की सहायतार्थ ब्रह्मा, विष्णु, स्कन्द, यम आदि देवों ने भी अपनी शक्तियों को उत्पन्न किया। ये सभी शक्तियाँ सप्त मातृकाओं के नाम से प्रसिद्ध हुई।[3]

बरासौं से प्राप्त सप्त मातृकायें एक नवीन मंदिर की दीवाल में जडी (चुनी) हुई हैं। सप्तमातृकाओं में से केवल चार मातृकायें ही शेष है। वे सभी चतुर्भुजी एवं ललितासन में है। प्रतिमाओं के आयुध एवं वाहन स्पष्ट नहीं है। संभवतः उनके एक हाथ में चँवर है। उक्त विवेचित प्रतिमाओं में से एक प्रतिमा के त्रिशाखा मुकुट के आधार पर पहचाना जा सका है। सामान्यतः त्रिशाखा युक्त मुकुट कार्तिकेय अथवा कौमारी का होता है अतः उक्त दायीं प्रथम प्रतिमा कौमारी की है। प्रतिमाओं के अंत वीरभद्र का अंकन दिखायी देता है। सभी प्रतिमायें कंकण, कुण्ड़ल, हार, कटिसूत्र आदि से अलंकृत है। (चित्र क्र. 4)

शिवलिंग

शिव सर्वव्यापी पूर्ण ब्रह्म है। आकाश की गोलाकार ऊंचाई इनका शीश है, आकाश की नीलिमा इनके केश है और इस विस्तृत नील शून्य का सबसे सुन्दर रत्न चन्द्रमा इनका शिरोभूषण है। इसलिए शिव को 'व्योमकेश'' तथा ''चन्द्रशेखर'' कहा जाता है। समस्त ज्ञान की वे राशि है। तीनों वेद उनके नेत्र कहे जाते है। सूर्य, चन्द्र और अग्नि भी शिव के त्रिनेत्र कहलाते है। सत, रज, तम नामक तीनों गुण और ज्ञान, इच्छा और क्रिया नामक तीनों शाक्तियाँ भी उनके नेत्रों से अथवा त्रिशूल से जानी जाती है। तप, शौच, दया और सत्य नामक चार पैरों वाला धर्म ही वृषरूप में शिव का वाहन नन्दी है। कालिदास ने शिव की अखण्ड़ सत्ता का गुणगान किया है। उन्होंने यहाँ तक स्वीकार किया है कि ब्रह्मा, विष्णु और महेश एक ही मूर्ति के तीन रूप है। पुराणों में ब्रह्मा, विष्णु और शिव को ब्रह्म की तीन प्रधान शक्तियाँ बताया गया है। यही शक्तियाँ सृजन, पालन और संहार कहलाती है।[4]

शिवलिंग को शिव का प्रतीक माना गया है। इसमें शिव का अर्थ कल्याणकारी तथा लिंग का अर्थ सृजन है। सृजनहार एवं शक्ति के चिन्ह के रूप में लिंग की पूजा की जाती है। स्कंद पुराण में लिंग का अर्थ लय बताया गया है। लय अर्थात् प्रलय के समय अग्नि में सब भस्म होकर शिवलिंग में समा जाता है और सृष्टि के आदि में लिंग से सब प्रकट होता है। लिंग के मूल में ब्रह्मा, मध्य में विष्णु और महादेव स्थित है। अकेले लिंग की पूजा से समस्त देवों की पूजा हो जाती है। ग्राम बरासों में लगभग दस से अधिक शिवलिग बिखरे पड़े है। ये शिवलिंग 2 फीट से लेकर 4 फीट तक लम्बे तथा एक फीट से अधिक ब्यास वाले है। इन लिंगों में ब्रह्म, विष्णु और रूद्र भाग का निर्माण किया गया है। ब्रह्म भाग चौकोर, विष्णु भाग अष्टकोणात्मक और रूद्र भाग गोल बनाया गया है। ब्रह्म भाग नीचे का, विष्णु भाग बीच का और रूद्र भाग ऊपर का होता है। रूद्र भाग को ही पूजा भाग कहते है। रूद्रभाग पर एक रेखा भी उत्कीर्ण गयी है, जिसे ब्रह्मसूत्र कहते है। अधिकांश शिवलिंग ग्राम व ग्राम के आस–पास है बिखरे पड़े है, परन्तु कुछ लिंग गांव से दूर बैसली नदी के दूसरे किनारे से लगभग 1 किमी दूर स्थित है। यहाँ तीन शिवलिंग स्थापित हैं जिनमें से दो शिवलिंग चबूतरे (थान) पर तथा एक पहाड़ी पर स्वतंत्र रूप से खड़ा है। पहाड़ी पर स्थापित शिवलिंग लगभग 4 फीट लम्बा है तथा पास ही एक धनुष लिये हुए शिव की प्रतिमा पड़ी है। पहाड़ी के चारों ओर प्राचीन ईंटें बिखरे पड़ी है। यह नष्टप्रायः मंदिर संभवतः नागों के समय का रहा होगा।(चित्र क्र.5)

सहस्त्रलिंग

यह शिवलिंग पुलिस थाने के पास स्थित जग्गा के एक नवीन मंदिर में स्थापित है। इसी जग्गा में दो अन्य साधारण शिवलिंग स्थित है। इन शिवलिंगों को मूर्तिभंजकों ने तोड़ने की कोशिश की है, जिस कारण उक्त शिवलिंग बीच से चटक गये है। उक्त में से एक शिवलिंग का आधा भाग शेष है। (चित्र क्र. 6)

सर्वतोभद्र शिवलिंग

सर्वतोभद्र शिवलिंग ग्राम के मध्य में एक चबूतरे पर स्थापित है। लोग उसे माता के नाम से पूजते है। उक्त शिवलिंग, कीर्तिमुख तथा मंदिर का प्रस्तर खण्ड़ मकान बनाने के लिए उत्खनित की गई नींव से प्राप्त हुए थे। इसी प्रकार का एक शिवलिंग बराहेड़ (गोहद, जिला–भिण्ड़) से प्राप्त हुआ था जिसे डॉ. आर. ए. शर्मा (जीवाजी विश्वविद्यालय, ग्वालियर) ने सर्वतोभद्र शिवलिंग माना है। सर्वतोभद्र शिवलिंग मानना ही उचित प्रतीत होता है क्योंकि मुखलिंग पर शिव के केवल मुखों (अवक्ष आकृति) अंकन किया जाता है जबकि सर्वतोभद्र प्रतिमाओं में देवी–देवताओं की आकृति उनके शरीर सहिता अंकित की जाती है। बराहेड़ के शिवलिंग तथा बरासों के शिवलिंग भिन्न है। बराहेड के शिवलिंग के उत्तरी फलक पर गणेश, दक्षिणी फलक पर शिव, पूर्वी फलक पर सूर्य तथा पश्चिमी फलक पर उमा–महेश्वर का अंकन है5, परन्तु बरासों के शिवलिंग पर चारों दिशाओं में सदाशिव (त्रिमुखी), सूर्य, विष्णु तथा महेश का अंकन समपाद मुद्रा में किया है। सभी प्रतिमाओं के पीछे प्रभामण्ड़ल का अंकन किया गया है।

सदाशिव

बरासों के शिवलिंग पर एक ओर त्रिमुखी शिव को दर्शाया गया है, जिसे शिव के त्रिमुखी रूप सदाशिव से समीकृत किया जा सकता है, जिसमें मध्य में तत्पुरूष, दांयी ओर वामदेव तथा बांयी ओर अघोर–भैरव रहता है। राज्य पुरातत्व संग्रहालय (भोपाल) तथा गूजरी महल संग्रहालय (ग्वालियर) में प्रदर्शित सदाशिव की प्रतिमायें त्रिमुखी है, जिसमें मध्य में तत्पुरूष (ईशान), दांयी ओर वामदेव तथा बांयी ओर अघोर–भैरव है। वामदेव (उमावक्र)6 को दर्पण लिये हुए स्त्री रूप में दर्शाया गया है, परन्तु बरासौ के सदाशिव रूप में वामदेव को दर्पण लिये हुए नहीं दर्शाया गया है। प्रतिमा में तीनों रूप स्पष्ट हैं तथा समपाद मुद्रा में खड़े है। दांयी ओर का अनुचर कलश धारण किये हुए तथा बांयी ओर का अनुचर खण्ड़ित है। प्रतिमा दो भुजी है तथा दोनों भुजायें खण्ड़ित है। प्रतिमा कुण्डल, रूद्रहार, यज्ञोपवित, कटिमेखला, जटा–जूट आदि से अलंकृत है। (चित्र क्र. 7)

शिव की विशिष्ट प्रतिमाओं में सदाशिव शिव का योगिश्वर रूप है। शैव सिद्धांत अनुयायियों द्वारा पूजित ये प्रतिमाएँ कालान्तर में पाशुपताचार्यो द्वारा भी मान्य की गयीं। इनमें शिव के तीन मुखों में से एक मुख अघोर का होता है। अपराजितपृच्छा में सदाशिव को शिव का सम्मिलित रूप भी माना गया है। श्री तत्वनिधि और आगम ग्रंथों में सदाशिव को एकादश रूद्रों में वर्गीकृत किया गया है।[7] सदाशिव की प्रतिमायें गूजरी महल संग्रहालय (ग्वालियर), केन्द्रीय संग्रहालय (इन्दौर), रामवन संग्रहालय (जसौ, सतना), राज्य पुरातत्व संग्रहालय (भोपाल) आदि से प्राप्त होती है।

शिव

शिव को दो भुजी तथा समपाद मुद्रा में अंकित किया गया है। उनके दोनो हाथ खण्ड़त है। वे कुण्डल, चीवर, यज्ञोपवित, रूद्रहार, कमरबंध, उस्तरीय धारण किये हुए हैं। उनके दोनों ओर खण्डित अनुचर खड़े हुए है। प्रतिमा का मुखाकृति भी खण्ड़त है। शिव के इस रूप को भिक्षाटन से समीकृत किया जा सकता है। (चित्र क्र. 8)

विष्णु

विष्णु को चतुर्भुजी तथा समपाद मुद्रा में अंकित किया गया है। उनके दो हाथ आयुध गदा एवं चक्र के ऊपर है तथा अन्य दो हाथों के आयुध स्पष्ट नहीं हैं। वे कुण्डल, चीवर, यज्ञोपवित, रूद्रहार, कटिमेखला, उस्तरीय धारण किये हुए हैं। प्रतिमा का मुखाकृति खण्ड़त है। (चित्र क्र. 9)

सूर्य

सूर्य को दो भुजी तथा समपाद मुद्रा में अंकित किया गया है। उनके दोनो हाथों में सनाल पद्म हैं जो ऊपर की ओर खण्ड़त है। वे कुण्डल, चीवर, यज्ञोपवित, रूद्रहार, कटिमेखला, कवच धारण किये हुए हैं। उनके दोनों ओर अनुचर दण्ड़ एवं पिंगल खड़े हुए है। प्रतिमा का मुखाकृति खण्ड़त है। (चित्र क्र. 10)

जिस प्रकार गाँव–गाँव से शिवलिंग प्राप्त होते है उसी प्रकार गणेश की अनगिनत प्रतिमाएँ इस क्षेत्र में बिखरी पडी हैं। बरासौ से गणेश की कई प्रतिमाएँ सूचित हैं। गणेश की दो प्रतिमा जिला संग्रहालय, भिण्ड़ में संग्रहित है जो बरासौ से प्राप्त हुई थी। यह प्रतिमा लगभग 10वीं शताब्दी ई. की प्रतीत होती है। इनमें से एक युगल गणेश की प्रतिमा है यह संभवतः पंच गणेश की खण्ड प्रतीत होता है।

संदर्भ सूची

1.मिश्र, इंदुमति (2009) प्रतिमा विज्ञान, मध्यप्रदेश हिन्दी ग्रंथ अकादमी, भोपाल, पृ. 259।
2.श्रीवास्तव, ए. एल. (1989) प्रकृति–पुरूष का निदर्षन उमा–महेश्वर, पुरातन, अंक–6, पृ. 208।
3.मिश्र, इंदुमति, उपर्युक्त, पृ. 173।
4.श्रीवास्तव, ए. एल., उपर्युक्त, पृ. 208।
5.Sharma, R. A. (1989) Shaiva art and Iconography of Barahed, Puratan, No. 6, Bhopal. P. 111-113.
6.Kumar, Krishna (1975) A dhyan- Yoga Maheshamurti, and some reflections on the Iconography of the Maheshamurti Images, Artibus Asiae, Artibus Asiae Publisher, Vol-37, No. ½, P. 105.
7.मिश्र, ओम प्रकाश (1991) संपा. मध्यप्रदेश की शैव प्रतिमाएँ, राज्य संग्रहालय, भोपाल, पृ. 29–30।

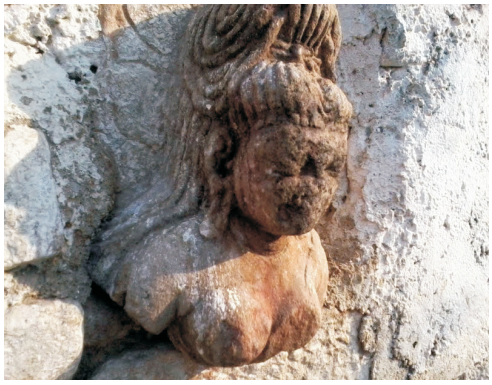

चित्र क्र. 1: पार्वती

चित्र क्र. 2: उमा–महेश्वर (जिला संग्रहालय, भिण्ड)

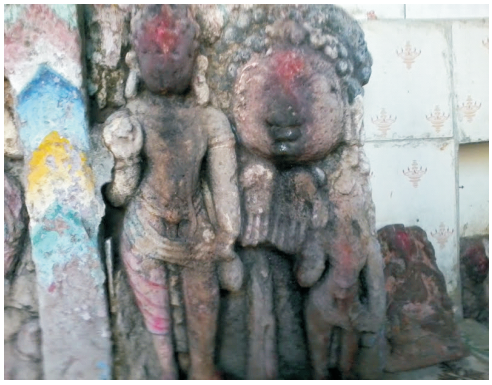

चित्र क्र. 3: नवगृह (राहू, केतु)

चित्र क्र. 4: सप्तमात्रिकाएँ

चित्र क्र. 5: साधारण लिंग

चित्र क्र. 6: सहस्त्रलिंग

चित्र क्र. 7: सदाशिव

चित्र क्र. 8: शिव (सद्योजात)

चित्र क्र. 9: विष्णु

चित्र क्र. 10: सूर्य